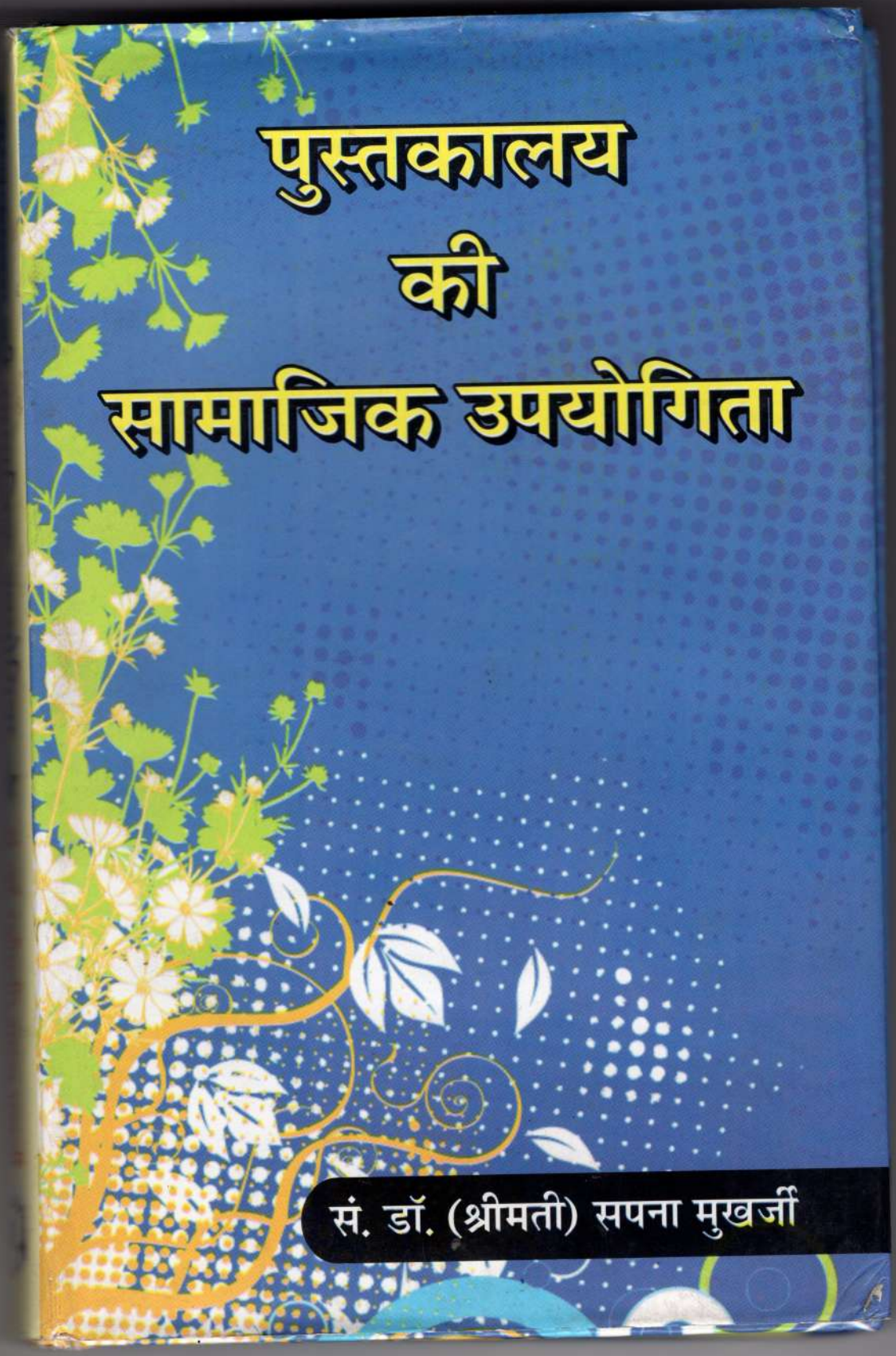

पुस्तकालय
की
सामाजिक उपयोगिता
सं. डॉ. (श्रीमती) सपना मुखर्जी

पुस्तकालय की सामाजिक उपयोगिता

संपादक
डॉ० (श्रीमती) सपना मुखर्जी

समता प्रकाशन, कानपुर-देहात

अनुक्रम

1. छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण
मनीष कुमार, उदय कुमार वट्टी 11-15
2. क्रीड़ा के विकास में पुस्तकालय की भूमिका
सरिता मिश्रा 16-19
3. छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास में ग्रंथालय का योगदान
श्रीमती शालिनी शुक्ला 20-22
4. विधि व्यवसाय के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी एवं ग्रंथालय का महत्त्व (छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के विशेष संदर्भ में)
डॉ. रामकीर्तन तिवारी, प्रमोद कुमार शर्मा 23-31
5. भारत में उच्च शिक्षा और ग्रंथालय
श्रीमती आशा साव 32-37
6. निगमीय सामाजिक उत्तरदायित्व एवं शैक्षणिक ग्रंथालय
श्रीमती भावना वर्मा 38-40
7. ग्रामीण विकास में ग्रंथालय का योगदान
अश्वनी कुमार, दिप्ती साहू 41-46
8. भारत में पुस्तकालय आन्दोलन एवं समाज में उसका प्रभाव
हेमेश्वरी बघेल, जितेन्द्र कुमार गौतम 47-51
9. भारत में पुस्तकालय आन्दोलन
कु. नजीरा तरन्नुम, श्रीमती माया ठाकुर 52-53
10. सूचना प्रौद्योगिकी एवं ग्रंथालय
डॉ. मो. इम्तियाज अहमद, रश्मि मिश्रा 54-58
11. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में ग्रंथालयों का भविष्य (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)
कृतराम सोनी, अश्वनी कुमार 59-61
12. पुस्तकालय प्रचार की आवश्यकता
कृतराम सोनी 62-69
13. ग्रंथालयों में आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का अनुप्रयोग
मनीषा कुमार, अश्वनी कुमार 70-75
14. जनसमुदाय की रुचि और ग्रंथालयों की भूमिका
श्रद्धा शेष 76-79
15. छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम 2007: आलोचनात्मक अध्ययन
अविनाश सिंह ठाकुर, कुंदन झा 80-86
16. ग्रंथालय का ऐतिहासिक विकास
रमेश कुमार चौधरी, धीरज कुमार, बिहारी लाल पटेल 87-93
17. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पुस्तकालयों का महत्व
कु० मनीषा भरद्वाज, मुकेश कुमार कठैतिया 94-102
18. विश्वविद्यालयीन शिक्षकों की सूचना आवश्यकता पण्डित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में
कु. पुष्पलता भल्ला 103-116
19. बाल ग्रंथालय
श्रीमती माया ठाकुर, कु. नजीरा तरन्नुम 117-119
20. पुस्तकालय प्रसार सेवा से आशय और छत्तीसगढ़ राज्य में आवश्यकता
गोवर्धन पटेल, कामेश्वर ताम्बोली, प्रेमलता तोड़ा 120-124
21. सामाजिक विकास में ग्रंथालयों की भूमिका
डॉ. ऋचा यादव, श्रीमती कामटी सिंह परिहार 125-129
22. ग्रामीण विकास में ग्रंथालय का योगदान: शासकीय गुण्डाधूर महाविद्यालय ग्रंथालय के विशेष संदर्भ में
उदय अढ़ाऊ 130-132
23. पुस्तकालय सेवाओं का विपणन
मीनाक्षी यदु 133-135
24. ग्रंथालयीन सेवाओं में लागत-लाभ-विश्लेषण
सुनील कुमार सोनी 136-145
25. सामाजिक विकास में ग्रंथालय की भूमिका
शैलेन्द्र कुमार तिवारी 146-148
26. Implementing the knowledge management in various sector
Barada Kanta Mohanty 149-156

27. Role of libraries in social development : library & higher education in India
Dr. Ram Kirtan Tiwari, Dr. (Smt)Abha Mishra 157–159

28. Future of Libraries in Modern Education System
Debendra Kumar Barik 160–166

29. Positive Professional Potentialities of a Librarian in Modern Perceptions
G.Balaramachari 167–178

30. Objective And Services of Library Networks In India
Subhash Chand 179–192

31. Need And Promotion of Library Service In Agriculture Sector
Dr. Madhav Pandey 193–203

32. Historical Development of Libraries: From library to Cybrary
Om Prakash Singh 204–207

33. Modern Trends of ICT Application in Academic and Special Library
Bihari Lal Patel, Kundan Jha, Jitendra Kumar Gautam 208–212

34. Uses of Information Communication Technology at Nehru Library, IGKV, Raipur (C.G.)
Kundan Jha, Ashwani Kumar 213–221

35. School Library Blogs in India: An Overview
Jayshri Mondal 222–229

आलेख रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय 230–232

1.

छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

प्रस्तावना : भारत में पुस्तकालय आंदोलन की शुरूआत सन् 1907 में **बड़ौदा** के तत्कालीन महाराज 'सयाजी राव गायकवाड' के द्वारा हुई। बड़ौदा के महाराजा ने पुस्तकालय आंदोलन की रूपरेखा सुनिश्चित करने तथा पुस्तकालयों के संचालन के लिए अमेरिका के प्रसिद्ध पुस्तकालयाध्यक्ष **श्रीमान डब्लू, एन. बोर्डन** को अपने राज्य में आमंत्रित किया उन्होंने निश्चित योजना अनुसार भारत में पुस्तकालयों की स्थापना की। भारत में पुस्तकालयों की स्थापना करने का मुख्य उद्देश्य भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास करना तथा बौद्धिक चेतना का विकास करना था। पुस्तकालय का मुख्य लक्ष्य ज्ञान तथा सूचना का संग्रह कर उसे सुव्यस्थित करना तथा पाठकों तक प्रसारित करना था। सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना, रख-रखाव तथा विकास हेतु पुस्तकालय अधिनियम की आवश्यकता भारत में महसूस की गई। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व बौद्धिक स्तर को भूमिका अदा कर रहे हैं। विश्व में सर्वप्रथम पुस्तकालय अधिनियम सन् 1850 में **इंग्लैंड** में पारित हुआ था। भारत में सर्वप्रथम पुस्तकालय अधिनियम सन् 1948 में **मद्रास (तमिलनाडु)** में पारित किया गया था। जिसका मुख्य लक्ष्य पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास था।

पुस्तकालय अधिनियम की आवश्यकता एवं उद्देश्य : भारत में पुस्तकालय अधिनियम पारित करने का मुख्य उद्देश्य भारत के कोने-कोने में पुस्तकालयों की स्थापना करना था। पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास करना, समाज में जन-जागृति पैदा करना, समाज में बौद्धिक चेतना का विकास करना, ज्ञान-विज्ञान को सुव्यस्थित रूप से संग्रहीत करना तथा समाज तक सूचना प्रसारित करना एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु कार्य करना था। किसी भी राष्ट के विकास में पुस्तकालयों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। पुस्तकालय भारत में किसी न किसी रूप में आदिकाल से चला आ रहा है। पुस्तकालय समाज का दर्पण होता है। किसी भी राष्ट्र का राष्ट्रीय पुस्तकालय उस राष्ट्र की अमूल्य धरोहर को समेटे हुए होता है।

भारत में पुस्तकालय अधिनियम : भारत में सर्वप्रथम सन् **1931** में पुस्तकालय अधिनियम के बारे में चर्चा किसी अधिवेशन में की गई। वाराणसी में हुए सन्

8.
भारत में पुस्तकालय आन्दोलन एवं समाज में उसका प्रभाव

प्रस्तावना- भारत में पुस्तकालय का प्राचीन समय से ही किसी न किसी रूप में अस्तित्व रहा है पुस्तकालय एक सेवा भावी संस्था है जिसका द्वार सर्वसाधारण के लिए खुला रहता है। पुस्तकालय एक पवित्र ज्ञान का मन्दिर होता है जिसमें बिना किसी भेदभाव के पाठकों को ज्ञान रूपी प्रसाद प्रदान किया जाता है। पुस्तकालय ज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र होता है। पुस्तकालय के माध्यम से ही राष्ट्र का विकास सम्भव होता है। राष्ट्र के विकास से जनजागृति तथा बौद्धिक चेतना का विकास सम्भव होता है।

पुस्तकालय शब्द लैटिन भाषा के लाइब्रेरी शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ ग्रंथ या पुस्तक होता है। पुस्तकालय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1374 में ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में किया गया था। पुस्तकालय का मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। असुर मनीपाल को पुस्तकालय का राजा कहा गया है। उन्होंने जिनेवा में एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की थी। जिसमें बीस हजार से अधिक मिट्टी की पट्टिकायें सुरक्षित थीं। विश्व में सर्वप्रथम इंग्लैड में 1850 में पुस्तकालय अधिनियम लागू किया गया था। भारत में आदिकाल से पुस्तकालयों का योगदान समाज हित के लिए रहा है। भारत में पुस्तकालय आन्दोलन ने समाज को लाभान्वित किया है। प्राचीन समय में पुस्तकालय मात्र पुस्तक भंडार का साधन होता था। वहाँ पुस्तकालय अध्यक्ष द्वारा पुस्तकों की रखवाली की जाती थी। समाज के विशिष्ट लोगों को ही पुस्तक पढ़ने का अधिकार प्रदान किया गया था। परन्तु आन्दोलन ने पुस्तकालय के द्वार सर्वसाधारण हेतु सदैव के लिये खोल दिये।

भारत में पुस्तकालय आन्दोलन की आवश्यकता एवं उद्देश्य- भारत में पुस्तकालय आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य मानव के बौद्धिक चेतना का विकास करना है। राष्ट्र निर्माण तथा समाज में ज्ञान विज्ञान को प्रसारित करना था। भारत में पुस्तकालय आन्दोलन के माध्यम से पुस्तकालय का सर्वांगीण विकास करना था। भारतीय समाज एवं संस्कृति के विकास में पुस्तकालय आन्दोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मानव में ज्ञानरूपी गुणों के विकास में पुस्तकालय एक सशक्त माध्यम माना गया है। भारत में विभिन्न पुस्तकालय आन्दोलनों ने पुस्तकालय के द्वार सर्वसाधारण हेतु बिना किसी भेदभाव के खोला गया तथा

33.
Modern Trends of ICT Application in Academic and Special Library

Introduction:- The advancement of science and technology has made tremendous improvement and changed almost all walks of life. Especially, the magnetic word information technology has been chanted in all corners of the global arena and been incorporate in organizational, managerial, developmental and marketing sectors. The services rendered with the help of ICT and faster and more effective. Librarians are also changing to meet the demand put on them. The new generation whose demand for information is never met is always demanding that traditional libraries should be developed as well as equipped and interconnected as computerized libraries.

Concept of ICT:- ICT stands for information and Communication Technology. It covers different electronic periphirals which are using in storage, retrieval, manipulate and disseminate the information electronically i.e. Computer devices, e-mail etc.

Information and communication Technology is the general term for "Library Automation" that are used to replace manual system in the library.

ICT and Libraries:- Libraries which were considered only as the storehouses of knowledge have got a new outlook in the modern Information Communication Technology era. Information and Communication Technology (ICT) has brought a lot of convenience to the library users, library professional and some problems. Now, library professionals are playing role of information provider not the role of custodian of the documents. The activities which were carried out manually in libraries with so much of pain and strain are being carried out smoothly with the help of ICT with greater effectiveness. Library organization, administration and other

technical processing have become easier and more quantum of work can be done in relaxed mood. ICT, which is the basis for the MBO, generates more results at a given time. Today, library services, management and all other activities evolved around ICT and its tools. Academic libraries across the globe have seen the changes and confronting continuous flux of changes.

Uses of ICT in Library & Information Science:- The advent of computers, information communication technology (ICT) changed the appearance of libraries, earlier the libraries were considered as storehouse of knowledge but at present they are centers of dissemination.

Necessity of ICT in Academic and Special Libraries:-

- To Capture, store manipulate, and distribute information speedily
- To introduce and provide new services, revitalize the existing services by providing faster access to the resources, by overcoming the space and time barriers;
- To provide need-based (tailor made), browsing and retrospective search services to the users
- To have large number of databases in CDs;
- To develop/upgrade the abilities of professionals
- To provide and easier access information
- To assist people to develop their ICT skills for accessing information
- To give access to digital learning materia (Digital resource and e-information), which are set to increase in both quality and quantity
- To allow access to computer and the internet for everybody

Outcomes of ICT on Academic and Special Libraries:- The application of information technology in libraries outcome in increased operational efficiency. The IT increases productivity of library staff. It relieves professional staff from mundane jobs that involves a lot of duplication so that they can be fruitfully used for user-oriented library services. It improves quality of services rendered by the library.

The exponential growth of information has made manual system redundant giving way to computerized information storage and retrieval tools. The new information technology facilities